

अध्याय—5

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान जोरहाट

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान—एक सरसरी दृष्टि में

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान सात पूर्वोत्तर राज्यों, पश्चिम बंगाल, सिक्किम और अण्डमान एवं निकोबार द्वीपसमूहों में वनों की परिस्थितिकी पुनर्जनन, परिपालन और प्रबंध पर अनुसंधान करने के प्राथमिक उद्देश्य के साथ स्थापित किया गया है।

वर्ष 2001—2002 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

परियोजना 1 : पौधों और रोपणों में एकीकृत रोग प्रबंध (आर एफ आर आई/एफ पी/06/1999—2002)। तकनीकी रिपोर्ट हेतु सम्पर्क करें, प्रधान अन्वेषक—श्री राजीव कुमार बोराह।

उपलब्धियां : वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट परिसर में उगाए गए बांस पौधशालाओं और रोपणों में रोग मूल्यांकन में बांस की चार बीमारियों का पता चला। इनमें से बी. बैम्बोस की शाखा ऊतक क्षय सबसे गंभीर बीमारी पाई गई, जो एक सप्ताह के भीतर सारी शाखाओं को मार देती है इस बीमारी को 0.1 प्रतिशत कीदर पर बेविस्टिन का छिड़काव करने के बाद कुछ सीमा तक घटाया गया। किन्तु रोग कारक जीव की मृदा जनित प्रकृति इसके नियंत्रण को ज्यादा जटिल बना देती है। मेलाइना आर्बोरीया की कार्नीस्पोरा पर्ण चित्ती दूसरी महत्वपूर्ण बीमारी अभिलिखित की गई तथा बीमारी पौधशाला पौधों के लिए प्रतिकूल कारक पाई गई क्योंकि इसने रोगग्रस्त पौधों में असामयिक निष्पत्रण उत्पन्न किया। भारत से यह बीमारी पहली बार इस परपोषी में अभिलिखित की गई। पात्र में कवकनाशी की जांच ने इन्डोफिल एम—45 और बेविस्टिन को सबसे प्रभावी के रूप में उदघाटित किया, जो कवक की वृद्धि को 100 प्रतिशत रोक देता है। कवक विषाक्त के रूप में इनकी क्षमता के लिए मूल्यांकित पांच वानस्पतिकों में से अदरक, हल्दी सार अपेक्षाकृत ज्यादा प्रभावी पाए गए। इसके अलावा, पौधशाला और रोपण प्रत्येक में एक—एक सागौन के मामले दो बीमारियां अभिलिखित की गई। इनमें से सागौन की म्लानि सबसे गंभीर थी।

परियोजना 2 : वन पौधशाला के लिए कार्बनिक अपशिष्ट आधारित गुणवत्ता कम्पोस्ट का उत्पादन (आर एफ आर आई/एफ पी/04/1999—2002)। तकनीकी रिपोर्ट के लिए सम्पर्क करें, प्रधान अन्वेषक—श्री राजीव कुमार बोराह।

उपलब्धियां : एक आम पौधशाला खरपतवार (यथा—इम्पराटा सीलिन्ड्रिका) के अपघटन का कवकी संरोपण तथा गाय के गोबर के घोल के उपयोग के प्रभाव का अध्ययन किया गया। गाय के

गोबर के घोल के साथ अधः स्तर के संचारण और असंरोपित नियंत्रण के फलस्वरूप, कवक के साथ संरोपित किए गए की तुलना में, भार की ज्यादा क्षति हुई ।

परियोजना 3 : झूम खेती के अन्तर्गत पादप समुदायों में आनुक्रमिक परिवर्तनों का अध्ययन (आर एफ आर आई/एस सी/01/1997-2001)। तकनीकी रिपोर्ट के लिए सम्पर्क करें, प्रधान अन्वेषक— डा0 जसबीर सिंह ।

उपलब्धियां : झूम परती वनस्पति और पास के विक्षुब्ध वन और आद्य वन के पादप सामाजिकीय अध्ययन किए गए। देशज प्रजाति सैकेरम अरुन्डिनेसीयम और इम्पराटा सीलिन्ड्रिका के साथ विदेशज खरपतवार प्रजाति लैन्टाना कमारा और क्रोमोलीना ओडोराटा परती भूमियों के प्रारम्भिक उपनिवेशक के रूप में देखे गए। प्रजाति विविधता चौथे वर्ष परती तक धीरे-धीरे बढ़ती हुई पाई गई। कोस्टस स्पीसियस, एगीरेटम होस्टोनिएनम, फाइलेन्थस यूरिनेरिया, ग्लोबा जैसी बड़ी संख्या में प्रजातियां और देशी औषध संकटापन्न हो रही हैं। एल्पिनिया एलूघास, कोस्टस स्पीसीओसस, जीओडोरम डेन्सिफ्लोरम, नीटम नीमॉन आदि झूम प्रभावित प्रजातियों के रूप में प्रेक्षित किए गए। कैस्टैनोप्सिस प्रजाति के साथ वाटिका लैन्सीफोलिया और इलीओकार्पस टेक्टोरियस प्राथमिक वन में अधिकतम पाई गयी। हीडनोकार्पस कुर्जि और डाइसोजाइलम प्रोसीरम विक्षुब्ध प्राकृतिक वन में प्रधान पाए गए।

परियोजना 4 : झूम खेती के अन्तर्गत मृदा के आकारिकीय, भौतिक और रासायनिक गुणों के परिवर्तनों का अध्ययन (आर एफ आर आई/एस सी/02/1997-2001)। तकनीकी रिपोर्ट के लिए सम्पर्क करें, प्रधान अन्वेषक— डॉ. जसबीर सिंह ।

उपलब्धियां : विभिन्न झूम खेती क्षेत्रों और समीपवर्ती वन से मृदा नमूने एकत्र किए गए। अभिलिखित परिणामों से यह अनुमानित किया जा सकता है कि झूम खेती ने मृदा के भौतिक रासायनिक गुणों में परिवर्तन कर दिया।

परियोजना 5 : असम के तीन जिलों की पौधशालाओं में फलीदार वानिकी वृक्षों से राइजोबियम नसलों का पृथक्करण और मूल्यांकन (आर एफ आर आई/एफ पी/08/1999-2001)। तकनीकी रिपोर्ट के लिए सम्पर्क करें, प्रधान अन्वेषक— डा0 जसबीर सिंह ।

उपलब्धियां : विभिन्न वन फलियों से कुल 42 नसलें पृथक् की गईं। इनमें से ऐकेशिया आरिकूलिफॉर्मिस से 8, डैल्बर्जिया सिस्सू से 13, ऐल्बिजिया प्रोसेरा से 7 और सेमेनिया सेमन से 14 पृथक् किए गए। उर्वरक नाइट्रोजन की उच्च मात्राएं मृदा में राइजोबियम की नाइट्रोजन स्थिरीकरण क्षमता की प्रभावशालीता को रोकती हैं।

परियोजना 6 : महत्वपूर्ण वन प्रजातियों का क्लोनीय प्रवर्धन (आर एफ आर आई/टी आई/06/1998-2001)। तकनीकी रिपोर्ट के लिए सम्पर्क करें, प्रधान अन्वेषक— डॉ. अशोक कुमार ।

उपलब्धियां : वयस्क वृक्षों के लिए कायिक प्रवर्धन प्रोटोकॉल विकसित किया गया। बार-बार कापिस करके किशोरावस्था समाविष्ट की गई और कलमों की मूलोत्पत्ति द्वारा प्रोटोकॉल मानकीकृत किया गया।

परियोजना 7 : बांसों और बेटों का आनुवंशिक संरक्षण और सुधार (आर एफ आर आई/04/1998-2001)। तकनीकी रिपोर्ट के लिए सम्पर्क करें, प्रधान अन्वेषक— डा0 के.सी. पाठक ।

उपलब्धियां : छः प्रजातियों बेम्बूसा टूल्डा, बेम्बूसा बेम्बोस, बेम्बूसा बाल्कुआ, बेम्बूसा न्यूटन्स, बेम्बूसा पालिडा और डेन्ड्रोकैलामस हेमिल्टोनाई का इनकी मांग, परिवार में उपयोग की सीमा, निर्माण और दस्तकारी उद्योगों के आधार पर चयन किया गया।

गुल्मों की गणना के लिए चयन तालिका विधि का उपयोग किया गया। मापदण्ड की प्रधानता इसके अन्तिम उपयोग के आधार पर प्रत्येक प्रजाति में निर्धारित की गई। उच्च अंकों वाले गुल्मों को धन गुल्म के रूप में मनोनीत किया गया और जननदृव्य संरक्षण के लिए चयन किया। चयनित गुल्मों के जननदृव्य पुनरावृत्ति में एकत्र करके वर्षा वन अनुसंधान संस्थान जननदृव्य बैंक में रोपित किए गए। वृद्धि दरें अभिलिखित की गई।

वर्ष 2001–2002 के दौरान जारी परियोजनाएं

परियोजना 1 : असम और अरुणाचल प्रदेश की कुछ आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण वन पादप प्रजातियों के लिए जैव उर्वरक के रूप में वी ए एम का विकास (आर एफ आर आई/ एफ पी/07/2000–2003)। प्रधान अन्वेषक— श्री राजीव कुमार कलिता।

स्थिति : नाहारोनी में वर्षा वन अनुसंधान संस्थान के प्रायोगिक स्टेशन में रोपित ईधन काष्ठ प्रजातियों में वी ए एम कवक की विविधता और गतिकी का मूल्यांकन करने के लिए सर्वेक्षण किया गया। परिवर्तनों ने कोई निश्चित रुझान नहीं अपनाया।

परियोजना 2 : मेलाइना आर्बोरीया और डिप्टेरोकार्पस रीटूसस के बीज और मृदा जनित रोगों का प्रबंध (आर एफ आर आई/ एफ पी/05/2000–2003)। प्रधान अन्वेषक— डॉ. ए.एन. सिंह।

स्थिति : फोमा और फ्यूजेरियम की कवकी वनस्पति प्रजातियां प्रधान पाई गई तथा मेलाइना आर्बोरीया की विभिन्न क्लोनों से ताजे नमूनों में और मेलाइना आर्बोरीया की कायिक कलमों के विगलन में इनकी भूमिका बार-बार नियत होती है। मरक्यूरिक क्लोराइड (0.2 प्रतिशत) के अलावा, पात्र में कैप्टान (0.2 प्रतिशत) और बेविस्टिन (0.02 प्रतिशत) समान रूप से प्रभावी पाए गए। होलांगपाड़ा आरक्षित वन (गिबान वन्यप्राणि अभयरण्य) से एकत्रित डिप्टेरोकार्पस रीटूसस बीजों के नाशीजीव उत्पीड़न पर अध्ययन ने अत्यधिक नाशीजीव दबाव उद्घाटित किया। प्राकृतिक स्टैण्ड से केवल 32 प्रतिशत बीज स्वस्थ पाए गए। जैविकीय प्रतिरोधी, फार्मलडीहाइड अथवा सौर किरणों के साथ उपचारित मृदाओं की अपेक्षा या तो कैप्टान अथवा बेविस्टिन के साथ संयोजन में नीम केक के साथ उपचारित मृदा के फलस्वरूप न्यूनतम पौधशाला रोग प्रभाव हुआ। सभी उपचार जड़ और पर्णय रोगों को महत्वपूर्ण ढंग से दबाने में प्रभावी सिद्ध हुए। विभिन्न रसायन के प्रभाव की तुलना करके मेलाइना आर्बोरीया के पौधशाला रोगों के प्रभाव पर जैविकीय, मृदा सौरीकरण, धूमिकायन और मृदा संशोधन उपचारों को स्थापित किया गया। विभिन्न जैविकीय प्रतिरोधियों के साथ मृदा अथवा बीज उपचार रोग प्रभाव-क्षेत्र को नियंत्रित करने में अप्रभावी सिद्ध हुए। दो माह के पौधों में सभी उपचारों में कॉर्नोस्पोरा पर्ण चित्ती यत्र-यत्र शुरू हुआ, जिसने 100 प्रतिशत रोग प्रभाव और गंभीरता हासिल कर ली। कोई भी उपचार कॉर्नोस्पोरा पर्ण चित्ती के विरुद्ध प्रभावी नहीं पाया गया।

परियोजना 3 : हरी खाद और अकार्बनिक उर्वरकों द्वारा झूम खेती मृदा में एकीकृत पोषक प्रबंध (आर एफ आर आई/ एस सी/04/2001–2004)। प्रधान अन्वेषक— डॉ. जसबीर सिंह।

स्थिति : सिलोनिजान कार्बी एंगलांग असम में परित्यक्त झूम परती में मृदा उर्वरता और उत्पादकता बढ़ाने के लिए हरी खाद एवं अकार्बनिक उर्वरक उपयोग के प्रभाव का अध्ययन करने हेतु क्षेत्र परीक्षण किए गए।

परियोजना 4 : उत्तर-पूर्व भारत की महत्वपूर्ण वन प्रजातियों की बीज जैविकी पर अध्ययन (आई. आर. एम डी एफ आर/ टी आई/01/1998-2003)। प्रधान अन्वेषक— डॉ. एम. कून्डू।

स्थिति— फोइबी गोलपेरेंसिस बीज के अंकुरण, प्रसुप्ति और बीज भण्डारण व्यवहार पर एक विस्तृत अध्ययन किया गया। माइकेलिया चम्पका बीज की निम्नतम सुरक्षित नमी मात्रा आकलित की गई और भण्डारण कार्यपद्धति के विकास के लिए परीक्षण जारी है। प्रायोगिक रूप से यह सिद्ध किया गया कि कैलेमस टीनू इस के बीज अड़ियल हैं और इन बीजों को कम से कम एक साल के लिए परिवेशी तापमान में 100 प्रतिशत आर एच पर सर्वोत्तम रूप से भण्डारित किया जा सकता है। होलांग (डिप्टेरोकार्पस रीटूसस) बीजों के लिए भण्डारण विधि का सुधार किया गया। केनेरियम रेसिनिफेरम के अंकुरण और अंकुरणक्षमता से संबंधित बीज शारीरिकी का अध्ययन जारी है।

परियोजना 5 : मेलाइना आर्बोरा का आनुवंशिक सुधार (आर एफ आर आई / टी आई / 03 / 1998-2002)। प्रधान अन्वेषक – डा० अशोक कुमार।

स्थिति : असम (38), अरुणाचल प्रदेश (38), मिजोरम (18) और पश्चिम बंगाल (25), से कुल 119 धन वृक्षों का चयन किया गया। दो स्थानों (देववन और नाहारानी) में 1.50 हैक्टेयर क्षेत्रफल में कायिक गुणन उद्यान स्थापित किए गए। कुल 9.25 हैक्टेयर क्षेत्रफल में असम (5.25 हैक्टे.), मणिपुर (3.00 हैक्टे.), और त्रिपुरा (1.00 हैक्टे.), राज्यों में क्लोनीय बीजोद्यान की स्थापना की गई। 2.50 हैक्टे. क्षेत्रफल में असम (1.0), मणिपुर (0.75), और त्रिपुरा (0.75), राज्यों में पौध बीजोद्यानों की स्थापना की गई। नाहारानी में 48 क्लोनों को मिलाकर उर्वरक परीक्षण स्थापित किए गए ताकि इन पर विभिन्न उर्वरकों की अनुक्रिया का अध्ययन किया जा सके। नाहारानी में वर्षा वन अनुसंधान संस्थान के प्रायोगिक स्टेशन में 70 क्लोनों के मूल्यांकन परीक्षण स्थापित किए गए, जिससे इनके प्रदर्शन, स्थायित्व और अनुकूलनशीलता की जांच की जा सके। मेलाइना आर्बोरीया के सत्ताइस क्लोनों पर कीट विज्ञानीय अध्ययन किए गए ताकि इनमें कैलोपीपला लीयाना प्रतिरोध की जांच की जा सके। आठ और छब्बीस प्रतिशत क्लोन नाशीजीव के प्रति अत्यधिक और साधारण प्रतिरोधी पाए गए। देववन में क्लोनीय बीज उद्यान में फलन और पुष्पन में परिवर्तनशीलता का मानीटरन किया गया।

परियोजना 6 : असम के काजीरंगा राष्ट्रीय पार्क में जैविकीय विविधता का पारिस्थितिकीय मानीटरन और इनके संरक्षण की रणनीतियां (आर एफ आर आई / ई ई / 01 / 1999-2001)। प्रधान अन्वेषक – डा० पी.के. खत्री।

स्थिति : काजीरंगा राष्ट्रीय पार्क में कोहोरा रेंज में वनस्पति अध्ययन किए गए। वनस्थली, बड़ी घास और छोटी घास भूमि के पादप सामाजिकीय गुणों का मूल्यांकन किया गया। वृक्ष समुदाय की प्रजाति विविधता तालिका की गणना की गई। बड़ी घासों की जैवमात्रा आकलन को मूल्यांकित किया। 23 स्थानिक और संकटापन्न औषधीय पादपों को अभिलिखित किया गया। पूर्व वर्षों में एकत्रित आंकड़ों की गणना की गई।

परियोजना 7 : डिप्टेरोकार्पस के विशेष सन्दर्भ में उष्णकटिबंधीय आर्द्र वन के वर्तमान स्तर का , इनके उपयोजन के लिए, मूल्यांकन (आर एफ आर आई/ई ई /02/ 2000-2002)। प्रधान अन्वेषक— डा. एस. त्रिवेदी।

स्थिति : अरुणाचल प्रदेश के नामदाफा टाइगर रीजर्व में उष्णकटिबंधीय आर्द्र वन में विभिन्न सूक्ष्म आवासों में सोलह स्थायी नमूना भूखण्ड तैयार किए गए। स्थायी भूखण्डों में पाई गई वनस्पति की पूर्ण गणना का कार्य पूरा किया गया। मृदा नमूनों के विश्लेषण का कार्य प्रगति पर है।

परियोजना 8 : पूर्वोत्तर भारत की चयनित बांस प्रजातियों के लिए पौधशाला तकनीकों का मानकीकरण (आर एफ आर आई / एस एम / 01 / 1999-2003)। प्रधान अन्वेषक—श्री एस. पटनायक।

स्थिति: चार विभिन्न बांस प्रजातियों यथा— बम्बूसा टूल्डा, बम्बूसा न्यूटन्स, बम्बूसा बाल्कुआ और डेन्ड्रोक्लैमस हैमिल्टोनाई, के लिए पौधशाला तकनीकें मानकीकृत की गईं। दो अन्य प्रजातियों यथा— बम्बूसा बैम्बोस और बम्बूसा पलिड़ा में परीक्षण तैयार किए गए। उर्वरक परीक्षण के लिए क्षेत्र तैयारी पूरी की गई।

परियोजना 9 : पूर्वोत्तर क्षेत्र की कुछ महत्वपूर्ण प्रजातियों के लिए पौधशाला में उर्वरक अनुक्रिया अध्ययन (आई आर एम डी एफ आर आई / एस एम / 02 / 1999-2003)। प्रधान अन्वेषक— श्री. बी गोयला।

स्थिति— पात्र मीडिया के साथ बड़े पौध पात्रों (8'x 6" पालीबैग) को, यहां तक कि बहुत छोटे जड़ ट्रेनर (150 सीसी) अथवा पालीबैग (8'x 3') द्वारा, प्रतिस्थापित किया जा सकता है। मेलाइन आर्बोरीया के अलग-अलग आयु समूह के पौधों पर क्षेत्र परीक्षण स्थापित किए गए तथा क्षेत्र में चार अलग-अलग प्रजातियों के लिए, उनके प्रदर्शन हेतु भी परीक्षण प्रक्रिया में है।

परियोजना 10 : उच्च विक्रेय जैवमात्रा के लिए डिप्टेरोकार्पस रीटूसस का आनुवंशिक सुधार (आर एफ आर आई / टी आई / 02 / 1998)। प्रधान अन्वेषक— श्री अजय ठाकुर।

स्थिति : आई बी ए की विभिन्न सान्द्रताओं के साथ पौधों और कॉपिस प्ररोहों की विभिन्न स्थितियों के प्रभाव का परीक्षण किया गया। चिप बडिंग सफलता पूर्वक की गई। कुल मिलाकर 20-30 प्रतिशत सफलता हासिल की गई। सफल संयोजन के लिए प्रारम्भिक बंसत सर्वोत्तम समय पाया गया। पौध बीजोद्यान से प्रजाति के कायिक गुणन पर कार्य शुरू किया गया। पौध बीजोद्यान देववन से एकत्रित पदार्थों को विभिन्न प्रयोगों में लगाया जा रहा है ताकि विभिन्न वृद्धि हार्मोनों का उपयोग करके प्रजाति की मूलोत्पत्ति क्षमता का पता लगाया जा सके।

वर्ष 2001-2002 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं

परियोजना 1 : विभिन्न वृक्ष वनस्पति के तहत मृदा भौतिक-रासायनिक एवं जैविकीय गुणों की गतिकी का अध्ययन करना (आर एफ आर आई / 2001-2004)। प्रधान अन्वेषक— डॉ. के.जी. प्रसाद।

स्थिति: मृदा सर्वेक्षण पूरा किया गया और विभिन्न स्थलों से एकत्रित मृदा नमूना का विश्लेषण किया गया।

परियोजना 2 : बांसों और बेंतों की वितरण गतिकी पर अध्ययन और पर-स्थाने संरक्षण (आर एफ आर आई / ई ई / 03 / 2001-2003)। प्रधान अन्वेषक— डा० के.सी. पाठक।

स्थिति : बांसों को 17 प्रजातियों के जननदृव्य संग्रह और संरक्षण किए गए।

परियोजना 3 : खासी पाइन (पाइनस केसिया) का आनुवंशिक सुधार (आर एफ आर आई / टी आई / 08 / 2001-2004)। प्रधान अन्वेषक— डॉ. ओमबिर सिंह।

स्थिति : मणिपुर और मेघालय राज्यों में क्रमशः 5 हैक्टे. और 10 हैक्टे. बीज उत्पादन क्षेत्रों की स्थापना के लिए छांटने और रखने वाले पादपों के संबंध में तकनीकी रिपोर्ट तैयार की गई और

छंटाई संक्रिया हेतु संबंधित राज्य वन विभागों को प्रस्तुत की गई। मणिपुर राज्य में छंटाई का कार्य पहले ही पूरा हो चुका है।

परियोजना 4 : विभिन्न अन्तिम उपयोगों के लिए चयनित बांस प्रजातियों का जननदृश्य मूल्यांकन (आर एफ आर आई / एम एम/03/ 2001-2004)। प्रधान अन्वेषक—श्री वी. के. डब्ल्यू वाजपेयी।

स्थिति : वन संवर्धन एवं वन प्रबंध प्रभाग द्वारा विकसित प्रोटोकॉल के अनुसार विभिन्न बांस प्रजातियों के धन गुणों को बहुगुणित किया गया। क्षेत्र परीक्षण के लिए त्रिपुरा में भूमि की पहचान की गई।

विदेशों से सहायता प्राप्त परियोजनाएं

वर्ष 2001-2002 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

परियोजना 1 : भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में ऊर्जा रोपण के लिए चयनित प्रजातियों का सर्वेक्षण एवं मूल्यांकन (आर एफ आर आई / ई पी/01/1999-2001)। (निधीयित: एम एन ई एस)। तकनीकी रिपोर्ट के लिए सम्पर्क करें, प्रधान अन्वेषक—श्री एन.एन. आसा।

उपलब्धियां — जोरहाट जिले में ईंधन काष्ठ प्रजातियों की मांग और आपूर्ति के लिए छ: ब्लॉकों में कुल 79 गांवों, शहरी क्षेत्र में तीन वार्डों और तीन चाय बागानों का सर्वेक्षण किया गया। परिणामों ने दर्शाया गया कि अधिकतम ईंधन काष्ठ की खपत ग्रामीण क्षेत्रों में और इसके बाद चाय बागानों में होती है। जिले में ईंधन काष्ठ की कमी प्रति साल 24876.69 टन पाई गई। परिणाम दर्शाते हैं कि क्षेत्र में उपयुक्त ईंधन काष्ठ प्रजातियों की कमी है। वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट, असम के नाहारोनी अनुसंधान स्टेशन में 20 ईंधन काष्ठ प्रजातियों के मूल्यांकन परीक्षण किए गए। एक साल की वृद्धि आंकड़ों ने दर्शाया कि कुछ प्रजातियों में भावी ऊर्जा कार्यक्रम के लिए क्षमता है। परिणाम दर्शाते हैं कि मैलोटस एल्बस, टीफरोसिया कैन्डिडा और एन्थोसीफेलस चाइनेन्सिस में अच्छी क्षमता है और इनका भावी ऊर्जा सृजन कार्यक्रम में उपयोग किया जा सकता है। दो आशाजनक ईंधन काष्ठ प्रजातियों यथा—एल्बिजिया ल्यूसिडा और मेलाइना आर्बोरीया के अन्तरालन परीक्षण तैयार किए गए। पहले साल के आंकड़ों ने विभिन्न अन्तरालन में कोई खास अन्तर नहीं दिखाया।

परियोजना 2 : दस्तकारी के लिए उपयुक्त बेंत और बांस प्रजातियों की संसाधन वृद्धि और प्रक्रमण (आर एफ आर आई / 2000-2002)। (निधीयित — यू एन डी पी एवं कपडा मंत्रालय, भारत सरकार)। तकनीकी रिपोर्ट के लिए सम्पर्क करें, प्रधान अन्वेषक—श्री एस. पटनायक।

उपलब्धियां : असम के आठ जिलों और मणिपुर के चार जिलों में बांस ओर बेंत दस्तकारी उद्योगों का सर्वेक्षण किया गया। ग्यारह बांस, और सात बेंत प्रजाति एकत्रित करके वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट में स्थित बांस वाटिका और बेंत वाटिका में रोषित किए गए। बम्बूसा न्यूटन्स, बम्बूसा बाल्कुआ, बम्बूसा, बेम्बोस, और डेन्ड्रोकैलामस हैमिल्टोनाई में विभिन्न कायिक प्रवर्धन तकनीकों की उपयुक्तता का परीक्षण किया गया। छ: विभिन्न बांस प्रजातियों के लिए पौधशाला एवं वन संवर्धन प्रबंध पद्धतियों को संकलित किया गया। बम्बूसा टूल्डा और बम्बूसा बाल्कुआ के लिए बाउचरी विधि द्वारा परिरक्षक उपचार अपनाया गया। वर्षा वन अनुसंधान संस्थान के जननदृश्य बैंक में बी. बाल्कुआ, बी. न्यूटन्स बी. टूल्डा और डी. हैमिल्टोनाई के जननदृश्य स्थापित किए गए। जोरहाट और इम्फाल में स्थित पौधशालाओं में बी. बम्बोस और कैलामस

टीनूइस प्रत्येक के चार-चार हजार पौधों का रोपण किया गया। किसान पौधशाला के लिए एक नयी वापस खरीदो योजना शुरू की गई। किसान पौधशाला के लिए छः समूहों से संबंधित चौदह उद्यमियों को सूचीबद्ध करके कार्य शुरू करने के लिए बीज उपलब्ध कराए गए। प्रदर्शन रोपण के लिए बी. बेम्बोस, ऑकलेन्द्रा ट्रेवेनकोरिका, बी. बाल्कुआ और बी. न्यूटन्स के पौधे उगाए गए। बांस और बेंत पौधशाला लगाने की तकनीकों पर असम मणिपुर के विभिन्न स्थानों पर आठ प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। असम और मणिपुर के विभिन्न स्थानों में बांस पौधशाला लगाने एवं रोपण प्रबंध तकनीकों पर सात वीडियो शो का आयोजन किया गया।

अनुसंधान उपलब्धियां

राज्य का नाम	2001-2002 में पूरी की गई परियोजना की संख्या	2001-2002 में जारी परियोजना की संख्या	2001-2002 में शुरू की गई परियोजनाओं की संख्या
असम	3	4	4
अरुणाचल प्रदेश	—	1	—
मणिपुर	—	1	—

शिक्षा और प्रशिक्षण

क्र.सं	नाम और पदनाम	प्रशिक्षण	प्रशिक्षण का स्थान	अवधि	राष्ट्रीय / अन्तर्राष्ट्रीय
1.	श्री पवन कौशिक,	अध्ययन दौरा	फ्लोरिडा, यू एस ए	30.7.2001 से 26.10.2001	अन्तर्राष्ट्रीय
2.	डा० तिलक चन्द्र भुयान,	अध्ययन दौरा	कुआलमपुर आइपोह मोंटाकाब और सीरेम्बान, मलेशिया	3.3.2002 से 10.3.2002	अन्तर्राष्ट्रीय
3.	डा.के जी. प्रसाद, और डा. अशोक कुमार	बौद्धिक सम्पदा अधिकार एवं बंगलौर संबंधित मामले	काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान	19-21 दिसम्बर, 2001	राष्ट्रीय
4.	श्री एच.एन. धुगाना	विभागीय अभिलेखों के लिए प्रबंध में ओरिएन्टेशन कोर्स	भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली	16-20 अप्रैल, 2001	राष्ट्रीय

5.	श्री. आर के. बोराह, डा० अशोक कुमार श्री बी.के पाण्डे, डा० ए.एन. सिंह, डा० एम कून्डू, श्री अजय ठाकुर, श्री एस पटनायक, डा० आर. सेट, श्री एच.पी सिंह, और डा० ओमबीर सिंह,	एस पी एस एस	तेजपुर विश्वविद्यालय, असम	24-28 सितम्बर, 2001	राष्ट्रीय
6.	श्री एन.एन. आसा, डा. आर सेट, श्री बी गोयला, श्री आर के कलिता, श्री आर के बोराह, डा. ओमबीर सिंह, और श्री बी.के. पाण्डे,	अनुसंधान लेखन	एन एफ एल आई सी भा.वा.अ.शि.प. देहरादून	5-9 नवम्बर, 2001,	राष्ट्रीय
7.	डा० ओमबीर सिंह, श्री एच.पी. सिंह, और श्री एस. पटनायक,	सर्वर और लान का प्रबंध	भा.वा.अ.शि.प., देहरादून	20-26 नवम्बर, 2001	राष्ट्रीय
8.	श्री एस. पटनायक,	विन्डो 2000 । सर्वर और नेटवर्क एडमिनिस्ट्रेटर	भा.वा.अ शि.प., देहरादून	-	राष्ट्रीय

9.	सभी प्रभाग प्रमुख, वैज्ञानिक, अनुसंधान सहायक और अनुसंधान अध्येता	एस पी एस एस वर्जन 10	वर्षा वन अनुसंधान संस्थान जोरहाट	—	राष्ट्रीय
----	--	----------------------	----------------------------------	---	-----------

सहानुबंध और सहयोग

राष्ट्रीय

असम, मेघालय, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल के राज्य वन विभागों तथा असम कृषि विश्वविद्यालय, जोरहाट, क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला, जोरहाट, टाकलाई प्रायोगिक स्टेशन, जोरहाट, पूर्वोत्तर हिल विश्वविद्यालय, शिलांग, सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी, तेजपुर, गुवाहटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी, असम विश्वविद्यालय, सिल्वर, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का पूर्वोत्तर क्षेत्रीय संस्थान, नाहरलेगून, राज्य वन अनुसंधान संस्थान, ईटानगर, पादप आनुवंशिकी संसाधन का राष्ट्रीय ब्यूरो, नई दिल्ली, केरल वन अनुसंधान संस्थान, पीची जैसे संगठनों के साथ पहले ही सहानुबंध विकसित कर लिए गए हैं।

प्रकाशन

पुस्तकें

1. अशोक कुमार, ओमबीर सिंह, अमरित केत्र मथारू, पी सैकिया और एच बी शर्मा (2001) सीड प्रोडक्शन एरिया ऑफ पाइन्स केसिया (एस पी ए/ एम एन/ पी. के/1) खोंघम्पट, इम्फाल (मणिपुर), वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट, सितम्बर, 2001।
2. के.जी.प्रसाद एप्लिकेशन ऑफ इम्प्रूव्ड टैक्नोलॉजी फॉर एफोरेस्टेशन इन नार्थ-ईस्ट इंडिया, के. जी. प्रसाद, (आई आर एम डी एफ आर- बी के-एन ओ-9)
3. सिंह जे. और अनुप चन्द्रा (2000)। शिपिटिंग कल्टीवेशन टू एग्रोफारेस्ट्री- चेन्जिंग परस्पेक्टिव। इन; ससटेनेबल मैनेजमेन्ट ऑफ फॉरेस्ट्स -इंडिया, सम्पादित-ए अरुणाचलम, एम.एल. खान। इन्टरनेशनल बुक डिस्ट्रिब्यूटर्स, देहरादून : 353-368।
4. सिंह, जसबीर, टी.सी. भुयान और ओमबीर सिंह (2001) सीड प्रोडक्शन एरिया ऑफ पाइन्स केसिया (एस पी ए/एम एल/पी के /II) रिडिट खान, शिलांग (मेघालय), वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट, दिसम्बर, 2001।

जॉर्नल्स

अन्तर्राष्ट्रीय

1. अशोक कुमार, पी.एच. चौहान और ए.के. मथारू (2001) इम्प्रूवमेंट थ्रो सलेक्शन ऑफ प्लस ट्रीज इन मेलाइना आर्बोरिया। जॉर्नल ऑफ ट्रापिकल फारेस्ट साइंस, मलेशिया (प्रेस में)।
2. सिंह ए. एन. और अजय ठाकुर। पालीइम्ब्रायोनी इन डिप्टेरोकार्पस रीटूसस ए न्यू रिकार्ड। जॉर्नल ऑफ ट्रापिकल फारेस्ट साइंस, फारेस्ट रिसर्च, कीपोंग- 52109 कुलालम्पुर, मलेशिया।

3. त्रिपाठी, वाई सी (2002) बायोटेक्नोलॉजी टूवार्ड्स इनहैन्सड प्रोडक्शन ऑफ फाइटो-फारमास्यूटिकल्स, इन रीसेन्ट प्रोग्रेस इन मेडिसिनल प्लांट्स, वाल्यूम-4, बायोटेक्नोलॉजी एण्ड जैनेटिक इंजीनियरिंग (सम्पादक : जे. एन. गोबिल. बी आनन्द कुमार और बी. के सिंह) साइंस टैंक पब्लि. / यू. एस. ए. 75-98, पी पी ।
4. त्रिपाठी वाई. सी और सी. पी. शर्मा (2002)। फार्माकोलॉजिकल वेलिडेशन ऑफ एन्टि-डाइबीटिक फाइटोमेडिसिन्स आफ एरिड राजस्थान, इन रीसेन्ट प्रोग्रेस इन मेडिसिनल प्लांट्स, वाल्यूम 8- फाइटोकैमिस्ट्री एण्ड फार्माकोलॉजी ॥ (सम्पादित डी.के. मजुमदार,, जे. एन गोविल, और वी .के सिंह) साइंस टैंक. पब्लि. यू.एस.ए 243-256, पी पी ।

राष्ट्रीय

1. अजय ठाकुर, और पापोरी शर्मा और नित्यानन्द महंता । स्टडी ऑन जर्मिनेशन वेरिएशन इन सीड्स ऑफ डिफरेंट प्रोवीनेन्स ऑफ ऐकेशिया मैन्जियम, इंडियन फॉरेस्टर, वाल्यूम, 127, और नं0 11 नवम्बर, 2001 ।
2. अजय ठाकुर ओर पापोरी शर्मा । राइजोजेनीसिस थ्रो लीफ बड कटिंग्स ऑफ डिप्टेराकार्पस रीटूसस: ए न्यू रिपोर्ट, इंडियन फॉरेस्टर, जन., 2002 ।
3. बरूआ, के. एन और जे0 सिंह (2001) । लीफ आर्किटेक्चर इन टर्मिनेलिया स्पीसिज जे. फारेस्ट्री, 24 (2) : 189-195 ।
4. चन्द्रा, ए. और रूपज्योति बोराह (2001) । फीजियोलॉजिकल एससमेन्ट ऑफ सीडलिंग क्वालिटी, एप्लिकेशन ऑफ इम्प्रूव्ड टैक्नोलॉजी फॉर एफोरस्टेशन इन इंडिया , एन ई एच यू और आई आर एम डी एफ आर : 70-78 ।
5. चन्द्रा ए., विजय रावत, रश्मि रेखा कलिता, आर. बोराह और एच. मिश्रा (2001) । बैम्बू एण्ड इट्स इन होमस्टीड-ए केश स्टडी इन दी टिटाबोर ब्लॉक ऑफ जोरहाट डिस्ट्रिक्ट ऑफ असम, के एफ आर आई, केरल : 72-74 ।
6. गोगई, सेबी ; जे. सिंह और के. जी. प्रसाद (2001) । देववन-सोताई स्वॉयल केटीना : इट्स कैरेक्टेराइजेशन एण्ड क्लासिफिकेशन एन. फॉर. 9 (2) : 264-274 ।
7. आई.पी. बोराह, ए बरूआ और जे. सिंह (2001) । इफेक्ट ऑफ मेटाबोलाइट ऑफ सीड माइकोप्लोरा ऑन सीड जर्मिनेशन एण्ड सीडलिंग ग्रोथ ऑफ ल्यूकेना ल्यूकोसीफाला (लाम्क.) डी विट एन. फॉर., 9 (2) : 323-326 ।
8. कून्डू एम., और एस. चंदा (2001) । प्रीलिमिनेरी स्टडीज ऑन डेसिकेशन एण्ड स्टोरेज ऑफ कैलामस टीनूइस रॉक्सब. सीड । डनिडा फोरेस्ट सीड सेन्टर (आई पी जी आर आई) में सं0 9 ।
9. कून्डू, एम. (2001) । डेसिकेशन एण्ड स्टोरेज ऑफ डिप्टेरोकार्पस रीटूसस सीड । डनिडा फॉरेस्ट सीड सेन्टर (आई पी जी आर आई) न्यूजलटेर में नं0 8, पी पी : 20-21 ।
10. कून्डू एम, और जे. कचारी (2001) । इफेक्ट्स ऑफ एक्सीलरेटेड एर्जींग आन मॉइस्चर, कन्टेन्ट, जर्मिनेशन परसेन्टेज एण्ड एलेक्ट्रोलाइट लीचेट ऑफ सीड्स ऑफ केसिया फिस्टूला लिन, । सीड रिसर्च वाल्यूम .29 (2) : 215-218 ।
11. नेगी एम.एस, एम. बाई अंसारी और एच पी सिंह (2001) । मार्केट चैनल्स इन एग्रोफॉरेस्ट्री प्रोडक्ट्स - ए केश स्टडी ऑफ यमुनानगर मार्केट इंडियन फॉरेस्टर, 127 (5) : 519-525 ।

12. पाठक के. सी. डी. नीओग, ए. के. शर्मा और पी. सी. सैकिया (2000)। जैनेटिक कन्जरवेशन एण्ड इम्प्रूवमेंट ऑफ वैम्बूज इन नार्थ-ईस्ट इंडिया इन एडवान्सेज इन फॉरेस्ट्री रिसर्च इन इंडिया वाल्यूम XXII 102-117
13. पटनायक टी. सी. के. सी. भुयान, के. के. पाठक, सी. शर्मा, बी. डेका, मीत्रम, आर.सी. सिंह और एच. कौर (2001)। एन इनसाइट इन्टू दी यूटिलाइजेशन पैटर्न ऑफ बैम्बू एण्ड केन्स इन दी हैन्डिक्राफ्ट इन्डस्ट्रीज ऑफ असम एण्ड मणिपुर। केरल वन अनुसंधान संस्थान पीची, केरल द्वारा 7-9 अगस्त, 2001 तक आयोजित निजी और सामुदायिक भूमियों में बांस, बेंत और वन वृक्षों की खेती और उपयोजन में नीति एवं वैधानिक विषयों पर राष्ट्रीय कार्यशाला में प्रस्तुत।
14. प्रसाद के. जी. और जे0 सिंह (2001)। इन्टगरेटेड एप्रोच टू शिपिंग कल्टिवेशन यह पेपर शिलांग में 11-12 अक्टूबर, 2001 को एन ए ई बी-एन ई एच यू द्वारा आयोजित पूर्वोत्तर भारत में झूम खेती के प्रबंध के लिए रणनीति पर कार्यशाला के दौरान प्रस्तुत किया गया।
15. सिंह, जे, और अनुप चन्द्रा (2001)। एफारस्टेशन-ए प्रैगमेटिक एप्रोच टू शिपिंग कल्टिवेशन। एप्लिकेशन ऑफ इम्प्रूव्ड टैक्नोलॉजी फॉर एफोरस्टेशन इन इंडिया, एन ई एच यू और आई आर एम डी एफ आर : 89-96।
16. सिंह, जे, ए. चन्द्रा, एच. सी. सैकिया और जी. ठाकुरिया (2002)। सोसियों - इकोनॉमिक स्टेटस ऑफ कार्बि ट्राइव ऑफ सिलोनिजान : ए केश स्टडी इन कार्बि एंगलांग डिस्ट्रिक्ट, असम (इंडियन फॉरेस्टर में प्रकाशनार्थ स्वीकृत)।
17. सिंह, जे0, आई पी. बोरा और ए. बरुआ (2002) इफेक्ट ऑफ शिपिंग कल्टिवेशन ऑन न्यूट्रिएन्ट स्टेटस ऑफ स्वायल इन सिलोनिजॉन (कार्बि एंगलाग) असम (इंडियन फारेस्टर में प्रकाशनार्थ स्वीकृत)।
18. सिंह, जे, आई पी. बोरा और ए. बरुवा (2002)। चेन्जेज ऑफ दी फीजिकोकैमिकल प्रोपर्टिज ऑफ स्वायल अंडर शिपिंग कल्टिवेशन वीद स्पेशल रीफरेन्स टू कार्बि एंगलांग डिस्ट्रिक्ट ऑफ असम (इंडियन जॉर फारेस्ट्री में प्रकाशनार्थ स्वीकृत)।
19. सिंह, जसवीर; इन्द्राणी पी. बोरा और अरुन्धती बरुआ (2001)। फीजिकोकैमिकल एट्रिब्यूट्स ऑफ स्वायल अंडर झूम कल्टिवेशन इन सभ्मफीनगिरि (बर्निहाट), मेघालय, एन. फार., 9 (2): 257-263।
20. त्रिपाठी वाई. सी. और रंजना आर्या (2000-2001)। इथनोमेडिसिनल एप्रेजल ऑफ ट्रेडिशनल फाइटोमेडिसिन्स ऑफ एरिड राजस्थान, जॉरनल ऑफ मेडिसिनल एण्ड एरोमेटिक प्लांट साइसेंज, 22/4 ए एवं 23/1 ए : 487-498।

कार्यवाहियां

1. "बैम्बू एण्ड इट्स यूजेज इन होमस्टीड- ए केश स्टडी इन दी टिटाबोर ब्लॉक ऑफ जोरहाट डिस्ट्रिक्ट ऑफ असम" शीर्षक से एक पेपर (परियोजना सं0 आर आई/ई पी/01) केरल वन अनुसंधान संस्थान, पीची. में 7-9, 2001 को आयोजित निजी एवं सामुदायिक भूमियों में बांस, बेंत और वन वृक्षों की खेती और उपयोजन में नीति एवं वैधानिक विषयों पर राष्ट्रीय कार्यशाला की कार्यवाही में प्रकाशित।
2. गोयला, बी, "नर्सरी मैनेजमेन्ट" लेख वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट, 2001 में

- सम्पन्न कार्यशाला में प्रस्तुत और कार्यशाला कार्यवाही, यथा—“एप्लिकेशन ऑफ इम्प्रूव्ड टेक्नोलॉजी फॉर एफोरस्टेशन इन नार्थ—ईस्ट इंडिया में समाविष्ट किया गया।
3. पटनायक, एस.; हजारिका, पी और दास पी., “प्रोडक्टिपिटी इम्प्रूवमेन्ट स्ट्रेटीजिज फॉर बैम्बूज ऑफ नार्थ—ईस्ट इंडिया” नामक शीर्षक से कार्यशाला में प्रस्तुत किया गया, जो वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट में 2001 में सम्पन्न हुई और “एप्लिकेशन ऑफ इम्प्रूव्ड टेक्नोलॉजी फॉर एफोरस्टेशन इन नार्थ—ईस्ट इंडिया” नामक कार्यवाही की पुस्तक में समाविष्ट किया गया।
 4. झासा. एन. एन. (2001)। ज्वाइंट फॉरेस्ट मैनेजमेंट, हिस्ट्री एण्ड ट्रेन्ड्स (24 से 26 अप्रैल, 2001 तक वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट, असम में सम्पन्न “एप्लिकेशन ऑफ इम्प्रूव्ड टेक्नोलॉजी फॉर एफोरस्टेशन इन नार्थ—ईस्ट इंडिया” पर कार्यशाला की कार्यवाही में)।

समाचार लेख

1. “इन्स्टीट्यूट टूडू रीसर्च ऑन बैम्बू ग्रोथ इन नार्थ—ईस्ट ” (टेलीग्राफ, 28 अक्टूबर, 2001)।
2. “किसान नर्सरी— वृस्टि बॉन गोबीसोना प्रोतिस्थान अभिनव असोनी” (दैनिक असम, असमिया दैनिक) 16 नवम्बर, 2001।
3. “बाह फुलार पिसोत लोबोलोगिया व्यवस्था” यथा – पुष्पण के बाद बांसों के प्रबंध के लिए रणनीतियां – (अमर असम, असमिया दैनिक) 11 दिसम्बर, 2001।
4. रेन फॉरेस्ट रीसर्च सोस्था की कार्यशाला (पूर्वाचल प्रहरी, हिन्दी समाचार पत्र, 2 जनवरी, 2002)।

तकनीकी बुलेटिन

“बांस और बेंत” पर प्रशिक्षण पुस्तिकाएं अंग्रेजी, असमिया और मणिपुरी भाषाओं में तैयार करके वितरित की गईं।

सम्मेलन, बैठक, कार्यशालाएं संगोष्ठी, प्रदर्शनियां

कार्यशालाओं / प्रदर्शनियों में भाग लिया

क्र.स	विषय	अवधि	द्वारा आयोजित
1.	बौद्धिक सम्पदा अधिकारों एवं संबंधित विषयों पर प्रशिक्षण एवं कार्यशाला, ऐल्बिजिया प्रजाति पर कार्यशाला एवं पुनरीक्षण	19-21 दिसम्बर 2001	काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान बंगलौर
2.	इक्कीसवीं शताब्दी की ओर वानिकी पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	—	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर

3.	वन प्रौद्योगिकियों के हस्तान्तरण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	—	वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर
4.	पूर्वोत्तर भारत में वनीकरण के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी के उपयोग पर कार्यशाला	24–26 अप्रैल, 2001	एन ई एच यू शिलांग और आर एफ आर आई, जोरहाट
5.	ऊर्जा रोपण परियोजना की पुनरीक्षण बैठक	31 अगस्त, 2001	गैर-परम्परागत ऊर्जा स्रोत मंत्रालय, जैवमात्रा प्रभाग भारत सरकार, नई दिल्ली
6.	निजी और सामुदायिक भूमियों में बांस, बेंत और वन वृक्षों की खेती और उपयोजन में नीति एवं वैधानिक विषयों पर राष्ट्रीय कार्यशाला	7–9 अगस्त, 2001	केरल वन अनुसंधान संस्थान, पीची
7.	पहाड़ और पर्वत पारितंत्र में कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए दृष्टिकोणों पर राष्ट्रीय सम्मेलन	18–20 अक्टूबर, 2001	उमियाम, मेघालय
8.	बेंत और बांस का अन्तर्राष्ट्रीय नेटवर्क	—	असम
9.	विभिन्न कार्यकलापों की प्रदर्शनी/निदर्शन	20–21 जनवरी, 2002	कॉटन कालेज, गुवाहटी
10.	चौथा भारतीय कृषि वैज्ञानिक एवं किसान सम्मेलन	16–17 फरवरी, 2002	बायोवेद रिसर्च एण्ड कम्प्यूनिवेशन सेन्टर, इलाहाबाद
11.	पटचौली (पोगोस्टीमॉन केबलिन) के व्यापारीकरण पर कार्यशाला	9–11 अप्रैल, 2002	एन ई डी एफ आई, गुवाहटी
12.	औषधीय और सुरभित पादपों के अनुसंधान एवं व्यापार में कार्य क्षेत्र एवं सुअवसरों पर राष्ट्रीय पारस्परिक प्रभावशील बैठक	17–18 मई, 2002	औषधीय एवं सुरभित पादपों का केन्द्रीय संस्थान, लखनऊ
13.	किसान मेला	8 फरवरी, 2002	असम कृषि विश्वविद्यालय, जोरहाट (असम)
14.	प्रदर्शनी	22–23 जनवरी, 2002	असम प्रशासनिक स्टाफ कालेज गुवाहटी

आयोजित कार्यशालाएं एवं सम्मेलन

क्र०सं०	विषय	अवधि	लक्ष्य समूह
1.	पूर्वोत्तर वन अधिकारियों की अनुसंधान सलाहकार समूह बैठक	2 व 3 नवम्बर, 2001	राज्य वन विभाग
2.	ऊर्जा रोपण परियोजना की पुनरीक्षण बैठक	14-15 जून, 2001	गैर-परम्परागत ऊर्जा स्रोत मंत्रालय, भारत सरकार
3.	नाहारोनी, गुवाहटी, इम्फाल में बांस और बेंत पर किसान प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम	—	किसान

अवार्ड

डा० वाई. सी. त्रिपाठी, वैज्ञानिक डी, सामुदायिक वानिकी एवं विस्तार प्रभाग, वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट को वर्ष 1998-99 हेतु अकाष्ठ वन उपज के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य के लिए आई सी एफ आर ई कैश अवार्ड से सम्मानित किया गया।

प्रतिष्ठित आगन्तुक

जोरहाट के डी आर डी ए अधिकारियों के साथ जिला प्रशासन प्राधिकारी, प्रधानाचार्य, साइंस कालेज और मुख्य अध्यापक, चीनियामगुड़ी हाई स्कूल ने प्रस्तावित वानस्पतिक उद्यान के संबंध में दिनांक 09.03.2002 को वर्षा वन अनुसंधान संस्थान का भ्रमण किया।

विविध

खेलकूद

क्र.सं०	सहभागी का नाम	खेल	पुरस्कार
1.	श्री मृदूल सैकिया	पावर लिफ्टिंग	स्वर्ण पदक
2.	मिस. रिता श्री खानिकर	बैडमिंटन (डबल्स) 4 X 100 मीटर रीले रेस	रजत पदक काँस्य पदक
3.	मिस बीबिजा लोकटांगबम,	4 X 100 मीटर रीले रेस	काँस्य पदक